डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 27-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद संहिता

ऋग्वेद की बाह्य रूपरेखा के अंतर्गत इसके शाखाओं मंडलों, अध्यायों और ऋचाओं की संख्या आदि पर हम विचार करेंगे।

ऋग्वेद की शाखाएं- महाभाष्यकार पतंजलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएं हैं, किंतु आधुनिक विद्वानों ने केवल 5 शाखाओं का उल्लेख किए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं -

1. शाकल शाखा,
2. वाष्कल शाखा
3. आश्वलायन शाखा
4. शांखायनशाखा
5. मांडूकायन शाखा।

उपर्युक्त शाखाओ में केवल शाकल शाखा ही संपूर्ण रूप में उपलब्ध होती है और वही प्रचलन में है। अतः ऋग्वेद का परिचय उसी शाखा के आधार पर यहां दिया जा रहा है ।

ऋग्वेद का विभाजन-

ऋग्वेद का विभाजन दो वर्गों में किया गया है

1. अष्टकक्रम के अनुसार
2. मंडल क्रम के अनुसार

अष्टकक्रम् के अनुसार ऋग्वेद की संपूर्ण ऋचाओं को आठ अष्टक में बांटा गया है प्रत्येक अष्टक में आठ अध्याय है। प्रत्येक अध्याय में वर्ग और प्रत्येक वर्ग में 5 से लेकर 9 तक ऋचाएं उपलब्ध है।

अतः अष्टक क्रम के अनुसार ऋग्वेद संहिता में 8 अष्टक, 64 अध्याय और 2006 वर्ग है ।

मंडल क्रम के अनुसार ऋग्वेद की संपूर्ण ऋचाओं को 10 मंडलों में विभक्त किया गया है । इन 10 मंडलों के आधार पर ऋग्वेद को 'दशतयी' भी कहा जाता है । ऋग्वेद के प्रत्येक मंडल में अनुवाक है और अनुवाको में सूक्त है । प्रत्येक सूक्त में ऋचाएं हैं। इन्हीं को मंत्र भी करते हैं। इस मंडल क्रम के अनुसार ऋग्वेद संहिता में-

10 मण्डल,

85 अनुवाक,

1028 सूक्त, तथा

10580 ऋचाएं हैं।

आधुनिक काल में ऋग्वेद के मंडलक्रम् के अनुसार विभाजन को ही विशेष महत्व दिया है।अनेक विद्वानों का मानना है कि यह विभाजन ऐतिहासिक भी है और वैज्ञानिक भी है।

ऋग्वेद का विषय

ऋग्वेद संहिता का शाब्दिक अर्थ

छन्दोबद्ध मंत्रा को ऋक् या ऋचा कहते हैं। वेद शब्द विद् धातु से बना है। अतः वेद का अर्थ ज्ञान है और संहिता शब्द का अर्थ संकलन होता है। इस प्रकार ऋग्वेद शब्द का अर्थ होता है-छन्दोबद्ध ज्ञान का संग्रह।

ऋग्वेद में स्तुतियां एवं प्रार्थनाएं

ऋग्वेद में वैदिक ऋषियोंद्वारा की गई स्तुति और प्रार्थना को संकलित किया गया है । स्तुति किए गए देवताओं की संख्या 33 है ।इनमें से लगभग 20 देवता ऐसे हैं जिनके संबंध में 3 या 3 से अधिक सूक्त मिलते हैं ।सर्वाधिक सूक्त लगभग 250 इंद्र की स्तुति में है।अग्नि की200 सूक्त में स्तुति है। इस प्रकार दूसरे स्थान पर अग्नि की और 100 सूक्त सोम की स्तुति में है।

उपर्युक्त तथा अन्य देवताओं की स्तुतियों के साथ ही ऋग्वेद में विभिन्न विषयों से संबंधित प्रार्थनाएं भी है।स्तुतिकर्ता अपने स्तुत देवता से कहीं तो शत्रु के विरुद्ध सहायता की मांग करते हैं,कहीं युद्ध में विजय के लिए मांग करते हैं और कहीं संपत्ति की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं।कुछ ऐसी भी प्रार्थनाएं ऋग्वेद में है जिसे स्तुतिकर्ता अपने देवता से स्वयं को वैभव संपन्न बनाने की प्रार्थना करता है, वह चाहता है कि उसे स्वर्ण ,आभूषण तथा पशुओं की प्राप्ति हो।उनके साथ ही कृषि के लिए वर्षा परिवार के लिए सुख और पशुधन की वृद्धि और परिवार की वृद्धि से संबंधित प्रार्थनाएं भी मिलती है।

यज्ञपरक सूक्त

स्तुति परक और प्रार्थना परक ऋचाओ के साथ ही ऋग्वेद में कुछ सूक्त ऐसे भी हैं जिनका उपयोग यज्ञ में होता है जैसे- आप्री सूक्त और अन्त्येष्टि सूक्त आदि।भारतीय दर्शन के प्रारंभिक तत्वों का संकेत भी इसमें मिलता है।पुरुष सूक्त ,हिरण्यगर्भ सूक्त और नासदीय सूक्त विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

संवाद सूक्त

ऋग्वेद में लगभग 20 सुक्त संवाद सूक्त में आते हैं।ऐसे सूक्तों में पुरुरवा- उर्वशी ,यम-यमी और सरमा- पणि के संवादों का वर्णन है।

कुछ विद्वान इन सूक्तों को आख्यानसूक्त मानते हैं क्योंकि इनमें अनेक प्राचीन आख्यान मिलते हैं । इन सूक्तों में नाटक और महाकाव्य इन दोनों के बीज मिलते हैं । अतः संवादों के कारण इनमें नाटकों का पूर्वाभास मिलता है और आख्यानों के कारण यह महाकाव्यों के पूर्व रूप को प्रस्तुत करते हैं।

दानस्तुतियां और पहेलियां

ऋग्वेद में कुछ शब्दों में यजमान आदि के द्वारा दिए गए दान की प्रशंसा भी मिलती है । ऐसे सूक्तो की संख्या लगभग 50 है । इनमें दान के साथ ही साथ कहीं-कहीं वीरता की भी स्तुतियां मिलती है। इस प्रकार ऋग्वेद के कुछ सूक्तो का संबंध वैदिक पहेलियों से भी जोड़ा जाता है । वस्तुत: यह विषय ऋग्वेद के गौण विषय है, प्रमुख नहीं।

उपर्युक्त दृष्टि से देखने पर हमें ज्ञात होता है कि ऋग्वेद वस्तुत: प्राचीन काव्य संग्रह है । प्रारंभ में कुछ विद्वानों का विचार था कि ऋग्वेद में केवल कुछ प्राचीन लोक गीतों का संग्रह हुआ है, किंतु विशेष अध्ययन के परिणाम स्वरूप हम पाते हैं कि ऋग्वेद एक उत्कृष्ट काव्य संग्रह है। इसमें सूर्य, पर्जन्य, मरुत और उषा-संबंधी सूक्तों में कवियों के जिह्वा पर साक्षात् सरस्वती वास करती है। ये काव्य के श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में सदैव प्रस्तुत किए जाते हैं। इन सूक्तों के अतिरिक्त प्राकृतिक शक्तियों का सुंदर चित्रण हुआ है।